Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 2138–2141

COMPARATIVE STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE OF SECONDARY SCHOOL STUDENTS

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

Nitin Kumar [1], Rajkumari Singh [2]

[1] Researcher, Department of Education, IFTM University, Moradabad, India
[2] Research Supervisor, Department of Education, IFTM University, Moradabad, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5072

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Emotional intelligence is an important skill that helps individuals understand, manage and use their own and others' emotions. The study of emotional intelligence of students in schools is important from the point of view that it has a profound impact on their academic and social development. Emotional intelligence is extremely important for the overall development of students. It not only affects their academic performance but also improves their social and mental health. Focusing on the development of emotional intelligence in schools can improve the overall well-being of students and prepare them to face various challenges in life. Findings from the research - No significant difference was found in the emotional intelligence of male and female students of secondary schools, no significant difference was found in the emotional intelligence of urban and rural students of secondary schools.

Hindi: भावनात्मक बुद्धि एक महत्वपूर्ण कौशल है जो व्यक्तियों को अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, प्रबंधित करने और उपयोग करने में मदद करता है। विद्यालयों में विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का अध्ययन इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है कि यह उनके शैक्षिक और सामाजिक विकास पर गहरा प्रभाव डालता है। भावनात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल उनके शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है, बल्कि उनके सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी सुधारता है। विद्यालयों में भावनात्मक बुद्धि के विकास पर ध्यान देने से विद्यार्थियों की समग्र भलाई में सुधार हो सकता है और उन्हें जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा सकता है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष - माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

Keywords: Secondary School, Student, Emotional Intelligence, माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, भावनात्मक बुद्धि

1. प्रस्तावना

भावनात्मक बुद्धि, जिसे आमतौर पर म्प् या म्फ के नाम से जाना जाता है, किसी व्यक्ति की अपनी भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने की क्षमता के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं को समझने और उनके साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता को संदर्भित करती है। यह अवधारणा 1995 में डैनियल गोलमैन द्वारा प्रस्तुत की गई थी और तब से इसे शिक्षा, प्रबंधन और व्यक्तिगत विकास के विभिन्न क्षेत्रों में महत्व दिया गया है। विद्यालयों में विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि की समझ और विकास उनके समग्र शैक्षिक और सामाजिक अनुभव को प्रभावित कर सकता है। भावनात्मक बुद्धि के प्रमुख घटक चार मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किए जा सकते हैं:

1) **आत्म-जागरूकता:** यह घटक व्यक्ति की अपनी भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता को संदर्भित करता है। आत्म-जागरूकता के तहत व्यक्ति अपने भावनात्मक हालात को समझता है और जानता है कि ये भावनाएं उनके निर्णय और व्यवहार को कैसे प्रभावित कर सकती हैं।
2) **आत्म-प्रबंधन:** इसमें व्यक्ति की भावनाओं को नियंत्रण में रखने और खुद को स्थिर और प्रेरित रखने की क्षमता शामिल है। आत्म-प्रबंधन के माध्यम से व्यक्ति तनाव, असंतोष और अन्य नकारात्मक भावनाओं को बेहतर ढंग से संभाल सकता है।

3) **सामाजिक जागरूकता:** यह घटक व्यक्ति की दूसरों की भावनाओं और सामाजिक संकेतों को समझने की क्षमता को संदर्भित करता है। इसमें सहानुभूति और सामाजिक परिस्थितियों की समझ शामिल है।
4) **संबंध प्रबंधन:** इसमें दूसरों के साथ प्रभावी और सकारात्मक रिश्ते बनाने की क्षमता शामिल है। इसमें अच्छे संचार कौशल, संघर्ष समाधान, और सहयोग की क्षमता होती है।

1.1. विद्यालयों में भावनात्मक बुद्धि का महत्व

भावनात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। आत्म-जागरूकता और आत्म-प्रबंधन की क्षमता विद्यार्थियों को उनके अध्ययन के प्रति समर्पित रहने और तनावपूर्ण परिस्थितियों में शांति बनाए रखने में मदद करती है। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार होता है। भावनात्मक बुद्धि का उच्च स्तर विद्यार्थियों को दूसरों के साथ बेहतर संबंध बनाने और समझने में मदद करता है। सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन के माध्यम से, विद्यार्थियों को समूह कार्य में सहयोगी और सहानुभूति रखने में मदद मिलती है, जिससे उनकी सामाजिक क्षमताएं विकसित होती हैं। भावनात्मक बुद्धि का विकास विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है। आत्म-प्रबंधन और आत्म-जागरूकता के माध्यम से, विद्यार्थी तनाव और चिंता को बेहतर ढंग से संभाल सकते हैं, जिससे उनकी समग्र मनोवैज्ञानिक भलाई में सुधार होता है।

1.2. भावनात्मक बुद्धि का मूल्यांकन और विकास

भावनात्मक बुद्धि का मूल्यांकन विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है, जिनमें आत्म-रिपोर्ट प्रश्नावली, शिक्षक की टिप्पणियां, और मनोवैज्ञानिक परीक्षण शामिल हैं। विद्यालयों में नियमित मूल्यांकन से विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि की क्षमता का पता लगाया जा सकता है और विकास के क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है। विद्यालयों में भावनात्मक शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने के तरीकों पर शिक्षित कर सकते हैं। विद्यार्थियों को प्रभावी संचार और सहानुभूति पर प्रशिक्षण देने से उनकी सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन क्षमताओं में सुधार हो सकता है। स्कूल काउंसलर्स और मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रदान किए गए समर्थन से विद्यार्थियों को उनके भावनात्मक मुद्दों को समझने और समाधान करने में मदद मिलती है।

कई विद्यालयों में भावनात्मक शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती, जिससे विद्यार्थियों को इस महत्वपूर्ण कौशल के विकास के अवसर सीमित हो जाते हैं। इसे संबोधित करने के लिए विद्यालयों को भावनात्मक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। कुछ शिक्षकों और अभिभावकों में भावनात्मक बुद्धि की समझ की कमी हो सकती है, जिससे विद्यार्थियों की भावनात्मक जरूरतों को अनदेखा किया जाता है। इसे सुधारने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों को भावनात्मक बुद्धि पर प्रशिक्षण और जागरूकता प्रदान की जानी चाहिए।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का अध्ययन उनकी समग्र शिक्षा और विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल उनकी अकादमिक सफलता को बढ़ाता है बल्कि उनके सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। भावनात्मक बुद्धि को प्राथमिकता देकर, स्कूलों और शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों को एक समग्र और संतुलित शिक्षा प्रदान करें, जो उन्हें जीवन के सभी पहलुओं में सक्षम बनाए। किशोरावस्था एक संवेदनशील और परिवर्तनकारी समय होती है, जहाँ आत्म-संयम और तनाव प्रबंधन की आवश्यकता होती है। भावनात्मक बुद्धि छात्रों को उनके तनाव और भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने में सहायता प्रदान करती है, जिससे वे स्कूल और जीवन के अन्य पहलुओं में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। माध्यमिक विद्यालय के छात्र अक्सर सामाजिक दबाव और मित्रता के मुद्दों का सामना करते हैं। भावनात्मक बुद्धि से लैस छात्र अपने सामाजिक रिश्तों को बेहतर समझ सकते हैं, सहानुभूति का प्रदर्शन कर सकते हैं, और स्वस्थ और सहयोगात्मक संबंध स्थापित कर सकते हैं। भावनात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को आत्म-प्रेरणा और आत्म-नियंत्रण के माध्यम से उनकी अकादमिक क्षमताओं को बेहतर ढंग से समझने और उन्हें लागू करने में मदद करती है। इससे उनकी शिक्षा में आत्म-विश्वास और प्रेरणा बढ़ती है, जो उनके प्रदर्शन को सुधारने में सहायक होती है। भावनात्मक बुद्धि व्यक्तिगत विकास और जीवन कौशल को बढ़ावा देती है। आत्म-जागरूकता और आत्म-प्रबंधन से छात्र अपने लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं और उनकी ओर प्रेरित रह सकते हैं। इससे वे भविष्य में सफल और संतुलित जीवन जीने में सक्षम होते हैं।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित निम्न शोधार्थियों अमृता कुमारी (2020), सुनील कुमार गुप्ता एवं पतंजलि मिश्र (2023) एवं रंजीत कुमार सिंह एवं सरिता गोस्वामी (2024) एवं ने शोध किये हैं।

4. समस्या कथन

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

5. चरों का परिभाषीकरण

1) **माध्यमिक विद्यालय -** माध्यमिक विद्यालय वह स्कूल होता है जिसमें कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की पढ़ाई होती है। इसे हिंदी में माध्यमिक शिक्षा भी कहा जाता है और यह प्राथमिक शिक्षा के बाद आता है। इस स्तर पर छात्रें को विभिन्न विषयों में गहन शिक्षा दी जाती है और यह उच्च शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।
2) **विद्यार्थी -** विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो शिक्षा प्राप्त करने की प्रक्रिया में होता है। विद्यार्थी आमतौर पर स्कूल, कॉलेज या किसी अन्य शैक्षणिक संस्थान में पढ़ाई करता है और ज्ञान, कौशल, और समझ को बढ़ाने के लिए पढ़ाई करता है। विद्यार्थी का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिगत और पेशेवर विकास करना होता है।
3) **भावनात्मक बुद्धि -** भावनात्मक बुद्धि वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझता है, उन्हें प्रबंधित करता है और उनके आधार पर उचित निर्णय लेता है। भावनात्मक बुद्धि का उच्च स्तर व्यक्ति को बेहतर संवाद, संघर्ष समाधान, और नेतृत्व क्षमताओं में सक्षम बनाता है।

6. अध्ययन के उद्देश्य

1) माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
2) माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

7. अध्ययन की परिकल्पना

1) माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2) माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

8. आंकड़ों का संकलन

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

9. न्यादर्श

वर्तमान शोध पत्र हेतु 500 छात्र एवं छात्राओं को शामिल किया गया है।

10.उपकरण

भावनात्मक बुद्धि मापनी:- डॉ0 पी0 श्रीनिवासन एवं श्री के0 मुरुगेशन द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

11.परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या 1 माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	250	24-06	4-35	0-34	0.05 = 1.96 0.01 = 2.59
छात्राऐं	250	24-30	4-35		

व्याख्या:- तालिका संख्या 1 में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि को दर्शाया गया है। तालिका में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की भावनात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन 24.06 एवं 4.35 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 24.30 एवं 4.35 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.34 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 2 माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
शहरी विद्यार्थी	250	25-18	4-31	1-08	0.05 = 1.96 0.01 = 2.59
ग्रामीण विद्यार्थी	250	24-16	4-26		

व्याख्या:- तालिका संख्या 2 में माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि को दर्शाया गया है। तालिका में माध्यमिक विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन 25.18 एवं 4.31 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 24.16 एवं 4.26 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.08 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

12.निष्कर्ष

1) माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2) माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमारी, अमृता (2020). उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, शोध पत्र, Journal of Research in Education, Volume-8, No.-2.

सिंह, रंजीत कुमार एवं गोस्वामी, सरिता (2022). माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, शोध पत्र, IJCRT, Volume 12, Issue 3.

गुप्ता, सुनील कुमार एवं मिश्र, पतंजलि (2023). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन, शोध पत्र, IJLE, Volume-3, No.-1.

पाठक, पी.डी (2007). भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007). सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।